ॐ

॥ श्री ॥

॥ ॐ तत्सत् ॥

॥ संगीतमंजरी ॥

भाग १ लो.

रची प्रसिद्ध करनार.

बालकृष्ण हरीदास देवगांधर्व उ. कीरतनीयाजी.

॥ श्लोक. ॥

साहित्यसंगीतकलाविहीनः ।
साक्षात्पशुपुच्छविशाणहीनः ॥
तृणनखादन्नपिजीवमांन ।
स्तद्भागधेयंपरमंपशुनाम् ॥

अर्थ.-संगीत कळा साहित्यथी हीन पुरुष पुंछडा अने सींगडा वगरना साक्षात् पशु छे अने ते ढोरने भाग्येज घास खाता नथी.

प्रश्न १ लुं–संगीत एटले शुं?

उत्तर– ॥ दोहो. ॥

गीत वाद्य अरु निरतको।
कहों नाम संगीत ॥
श्रीकृष्ण नाम उर धारके।
मानो गायन चीत ॥

अर्थात् गावुं वगाडवुं अने नृत्य करवुं.

प्र० २–आ त्रणथी शुं उत्पन्न थायछे?

उ०–गावाथी स्वर तथा रागनुं स्वरूप अने वगाडवाथी ताल विगेरेनुं स्वरूप ने नृत्य अथवा नाचवाथी भावनुं स्वरूप अर्थात् आ त्रण वस्तुथी दरेक प्राणीमात्रना चित्तने तादृश्य आल्हाद उत्पन्न थाय छे जेमके–

॥ दोहो. ॥

अहीप करायो जातहे ।
म्रग्ग सहत तन मार ।
मुरख मनुष्य कछु समझत नही ।
धिक वाको ओतार ।

प्र० ३—आ त्रणमां मुख्य शुं छे?

उ०—गान अथवा गायन.

प्र० ४—त्यारे गीत एटले शुं?

उ०—सप्त स्वरो आदि लेइने कोई पण गीतना छंदो राग रागणीना प्रमाणमां समावेश करीने गावुं तेनुं नाम गान अथवा गीत कहेछे जेमके गीए ते नाम गीता.

प्र० ५—वगाडवुं एटले शुं?

उ०—गातीवेळ ए गळा॰ांथी शृती मु-
र्छना गमक यति विगेरेना दरेक बा-
रीक भागो जे निसरे छे ते भागोने
तंतु वा दयोमां स्पष्ट करी बतावबामां
आवे छे के जेथी दरेक जीवोने आनंद
कारी थायछे तेम॰ शरीर तथा मन-
नो भावार्थ ते न्रत्य अथवा नाचव-
थी स्फु॰ उपर प्रमाणे थई शके छे.

प्र० ६—न्रत्यना भेद केटला छे?

उ०—न्रत्यना भेद आठ छे परंतु मु-
ख्य बे छे.

प्र० ७—कीया कीया अने तेनां नाम
शां शां छे?

उ०—तां॰वन्रत तथा लाश्यन्रत्य.

प्र० ८–ए बेना धाता कोण छे?

उ०–शंकर तथा पार्वती.

प्र० ९–गान अथवा गायनना भेद केटला छे?

उ०–बे छे.

प्र० १०–कीया कीया?

उ०– ॥ दोहो. ॥

दो प्रकार संगीत हे।
मारग देशी जान ॥
मारग ब्रह्मादिकके कहो।
देशि देश समान ॥

अर्थात् मार्ग तथा देशी.

प्र० ११–आ संगीत विद्यानुं मूळतत्व शुं छे?

उ०—सप्तस्वर तथा सप्तताल.

प्र० १२—स्वरो तथा तालोना नामशां शां छे ?

उत्तर— ॥ दोहो. ॥

षडजरीषभ गांधार अरु,
मध्यम पंचम जान॥
धैवत ओर निशा दहे,
बालकृष्ण परमान॥

सप्तस्वर.

स री ग म प ध नी

॥ दोहो. ॥

ताल आदी रुपक कहो,
झंपात्री पुटही जान॥
मंठक अठ ध्रुव तालहे,
सातो ताल प्रमान॥

॥ सप्तताल. ॥

एक्को, रूपक, झंपो, त्रिपुट,
आदी, दादरो, झमक, त्रिताल,

मठ, अठ, ध्रुव,
सुरफाग, चोताल, आडोचोताल,

प्र० १३–स्वरोना भेद केटलाछे ?

उ०–बे छे.

प्र० १४–कीया कीया.

उ०–चळ तथा अचळ.

प्र० १५–चळ तथा अचळ एटले शुं ?

उ०–जे स्वरो पोतानी जगा छोडता नथी ते स्वरोने अचळ तथा स्थाई स्वरो कहेछे अने जे स्वरोमां कांई फेरफार अथवा कमी जास्ती थवामां आवेछे

ते स्वरोने चळीत अथवा अस्थाई स्व-
रो कहेछे.

प्र० १६-अचळ स्वरो केटलाछे ?

उ०-अचळ स्वरो बे छे.

प्र० १७-कीया कीया ?

उ०-षडज अने पंचम.

प्र० १८-त्यारे चळीत स्वरो कीया
कीया थायछे ?

उ०-रीषभ, गांधार, मध्यम, धैवत अने
निशाद ए पांच स्वरो चळीत अथवा
अस्थाई थायछे परंतु आ पांच स्वरो-
मांथी मध्यम स्वरनो भेद जूदोछे.

प्र० १९-एनो भेद केवी रीतनोछे ?

उ०-पेहेलो मध्यम स्वर स्रुतीना भेद

वडे करीने शुद्ध मनायछे अने बीजो मध्यम स्वर तीव्रछे.

प्र० २०–शुद्ध स्वरो एटले शुं ?

उ०–तंतू वाद्योना नियम प्रमाणे जे स्वरो वाद्यो विगेरेमांथी नीकळेछे तेने शुद्ध स्वरो कहेछे परंतु रिषभ गांधार मध्यम धैवत अने निशाद ए पांच स्वरोना चार चार विभाग थायछे.

प्र० २१–केवी रीतना.

उ०–तीव्र, तरतीव्र, कोमळ अने अति कोमळ परंतु आ बधा भेद घणाना समजवामां नाआववाने लीधे मुख्य कोमळ अने तीव्र ए बे भेद राखवामां आव्याछे.

प्र० २२–कोमळ एटले शुं.

उ०–उपर वीसमा प्रश्नमां शुद्ध स्वरोनो दाखलो आपेलोछे तेना करतां आ स्वरो नीचा रहेछे माटे एने कोमळ स्वरो कहेछे अने कोमळ स्वरो करतां जे स्वरो उंचा रहेछे तेनुं नाम तीव्रस्वरो कहेछे.

प्र० २३–त्यारे आ स्वरो कोमळ अने तीव्र ए बधा मळीने कुल स्वरो केटला थायछे.

उ०–बार स्वरो थायछे.

॥ बार स्वरोनुं कोष्टक ॥

कायम	शुद्ध	शुद्ध	तीव्र	कायम	शुद्ध	शुद्ध
स	री	ग	म़	प	ध	नी
	कोमळ	कोमळ	शुद्ध		कोमळ	कोमळ
	री	ग	म		ध	नी

प्र० २४—आ बार स्वरोथी शुं उत्पन्न
थाय छे.

उ—०जाती भेद वडे करीने रागर ग-
णीओ विगेरे.

प्र० २५—जाती केटलीछे?

उ०—जाती पांचछे.

प्र० २६—कीई कीई?

उ०—ओडव शाडव संपुरण संकीरण
अने शुद्ध संपुरण.

प्र० २७—त्यारे ओडवजातीनो राग
कीयोछे.

उ०—मालकोस विगेरे.

प्र० २८—त्यारे मालकोसमां कीयाकीया
स्वरो वर्ज थायछे.

उ०-रीषभ अने पंचम.
प्र० २९-केवी रीते.
उ०- ॥ राग मालकोस ॥

॥ आरोह. ॥

का	शु	शु	शु	शु	का
सा	गा	मा	धा	नी	सा

॥ अवरोह. ॥

का	श	शु	शु	शु	का
सा	नी	धा	मा	गा	सा

॥ ताल राग वर्धन अथवा चर्चरी ॥
॥मात्रा दस, गति मध्य, जाती मीश्र.॥

॥ अस्ताई॥

सानिधनिसामगम गगमध नीधगऽ
गगमधनिसानिसासानिधमधनिधगऽ ॥

॥ अंतरो. ॥

गगमधनिसानिनिसा
सानिधगमनीधगम
ममगममधानिसा
सानिध गम निधगम॥

२

॥ रागणी सिंध भैरवी ॥

॥ आरोह॥

का	शु	को	शु	का	को	को	का
सा	री	गा	मा	पा	धा	नी	सा

॥ अवरोह ॥

का	को	को	का	शु	को	शु	का
सा	नी	धा	पा	मा	गा	री	सा

॥ ताल धीमो तीतालो ॥

॥मात्रा सोळ, गति मध्य, जाती चतुश्र.॥

॥ अस्ताई ॥

निसागगमप गम पनिधप मगरेसा ॥

॥ अंतरो ॥

धमधनिसा धनिसारेग मसानि सानिधप

तान

मनिधप गरेसारे ॥ सानिधपमगरेसा

३

॥ राग सारंग. ॥

॥ आरोह ॥

का	शु	शु	का	शु	का
सा	री	मा	पा	नी	सा

॥ अवरोह ॥

का	को	का	शु	शु	का
सा	नी	पा	मा	री	सा

॥ ताल आडो चोतालो ॥

॥मात्रा चौद, गति मध्य, जाती चतूश्र॥

॥ अस्ताई ॥

सारे मप निपम रेसा॥

॥ अंतरो. ॥

मपनिसा रेमरेसा रेसानिप निपम रेसा॥

४

॥ राग भीमपल्लासी ॥

॥ आरोह ॥

का को शु का को का

सा गा मा पा नी सा

॥ अवरोह ॥

का को को का शु को शु का

सा नी धा पा मा गा री सा

॥ ताल चोताल ॥

॥मात्रा बार, गति मध्यम, जातीचतूश्र॥

॥ अस्ताई ॥

निसागमप निधपम गम धप॰ग मगरेसा।

॥ अंतरो ॥

निधपम गम पानि सानिसा निधपम
गम धप मगरेसा. ॥

५

॥ राग मेळकल्याण. ॥

॥ आरोह. ॥

का	शु	शु	ती	का	शु	शु	का
सा	री	गा	मा	पा	धा	नी	सा

॥ अवरोह. ॥

का	शु	शु	का	शु	शु	शु	का
सा	नी	धा	पा	मा	गा	री	सा

॥ ताल सुरफाग. ॥

॥ मात्रादस, गतिमध्य, जातेचतुश्र ॥

॥ अस्ताई ॥

सानिधनिध॰प गरेगमग सासा
सा गरेगमपप धनिसानिधनिमप ॥

॥ अंतरो. ॥

पपधनिसानिसासा सारेगरेसानिध
गगरेसानिधमप धनिसानिधनिमप ॥

६

॥राग बेहाग॥

॥ आरोह. ॥

का शु शु का शु का
सा गा मा पा नी सा

॥ अवरोह॥

का शु शु का शु शु शु का
सा नी धा पा मा गा री सा

॥ ताल एको ॥

॥ त्राचार, गतिमध्य, जातिचतुरश्र ॥

॥ अस्ताई ॥

सागमपनिसा सानिध पगमपमगरेसा ॥

॥ अंतरो ॥

गमपानिसा गरेसासा पनिसारे सानिध
पनिधपम गमपमगरेसा ॥

॥ राग केदारो ॥

॥ आरोह ॥

७

का	शु	का	का
सा	मा	पा	सा

॥अवरोह॥

का शु शु का शु शु शु का
सा नी धा पा मा गा रे सा

॥तालदादरो॥

॥ मात्रा छ गतिमध्य जातिचतुश्र ॥

॥ अस्ताई ॥

निसागमप मपधनिधप मपधपमगम
पगमपमपगमरेसा ॥

॥ अंतरो ॥

मपधपमपसासासानिधपनिधपमरेसा॥

धीकांटे अमदावाद युनियन प्रिन्टिग प्रेसमां
शा. घेलाभाइ नेरसिंहदासे छापी.